आज के समय में सड़क व कामकाजी बच्चों को पूर्ण रूप से अनदेखा किया जा रहा है। अपने साथ हो रहे इस अन्याय के खिलाफ उन्होंने कमर कसी और सड़क व कामकाजी बच्चों की समस्याओं पर अपना एक खुद का अखबार "बालकनामा" लिखकर प्रकाशित करने लगे।

बढ़ते कदम
सड़क एवं कामकाज़ी बच्चों का संघ

बालकनामा

आप भी बन सकते हैं
बालकनामा अखबार का हिस्सा
1 लिखकर
2 खबरों की लीड देकर
3 आर्थिक रूप से मदद करके

बालकनामा से जुड़ने के लिए इस पते पर संपर्क करें - 31 बेसमेंट, गौतम नगर, नई दिल्ली-110049
फोन नं. 011-41644471
ईमेल- editorbalaknama@gmail.com

अंक-132 | सड़क एवं कामकाजी बच्चों का अखबार | जून 2025 | मूल्य - 5 रूपए

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पढ़ाई में लहराया परचम, अच्छे अंकों से पास होकर दिखाई शानदार सफलता

बालकनामा रिपोर्टर- दीपक, किशन व राजकिशोर

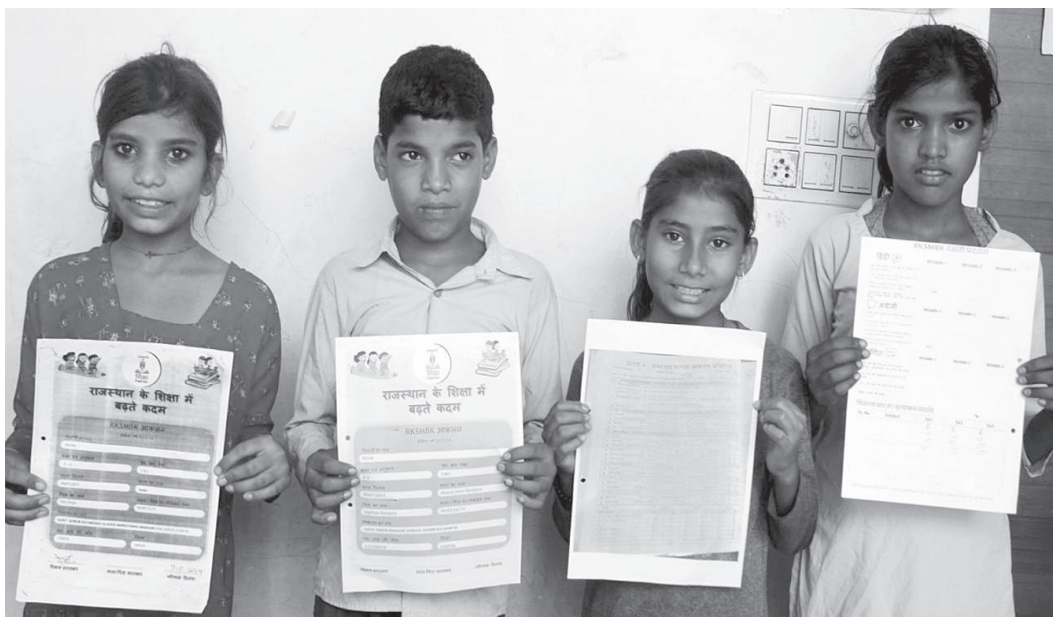

नोएडा, दिल्ली, गुरुग्राम जैसे शहरों को अक्सर ऊँची-ऊँची इमारतों और कॉर्पोरेट दफ्तरों के लिए जाना जाता है। लेकिन इन शहरों की चमक-धमक के पीछे झुग्गी-झोपड़ियों और घनी आबादी वाले ऐसे इलाके भी हैं, जहाँ हजारों प्रवासी परिवार बेहतर जीवन की तलाश में आकर बसते हैं। इन्हीं बस्तियों में रहने वाले सैकड़ों बच्चे ऐसे हैं, जो शिक्षा, सुरक्षा और पोषण जैसे बुनियादी अधिकारों से वंचित हैं। इन्हीं बच्चों के लिए चेतना संस्था आशा की किरण बनकर उभरी है एवं अपने प्रयासों के माध्यम से इन वंचित समुदायों में शिक्षा के दीप जला रही है।

गुरुग्राम, नोएडा, दिल्ली, जयपुर और लखनऊ जैसे शहरों में चेतना संस्था के प्रयासों से एक हजार से अधिक सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने शिक्षा की मुख्यधारा से जुड़कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। अनेक बच्चे जो कभी स्कूल नहीं गए थे या प्रवास के चलते जिनकी पढ़ाई अधूरी रह गई थी। दस्तावेजों की कमी और शिक्षा प्रणाली की उचित जानकारी न होने के कारण भी इन बच्चों के लिए स्कूल जाना आसान नहीं था। जब बालकनामा के पत्रकारों ने जयपुर की कच्ची बस्तियों का दौरा कर बच्चों से वार्षिक परीक्षा और शिक्षा से जुड़े अनुभवों पर बातचीत की, तो कई किस्से सामने आए।

गोलू (12 वर्ष), अमन (13 वर्ष), शान (11 वर्ष) और भारती (12 वर्ष) (सभी बच्चों के नाम परिवर्तित हैं।) जैसे बच्चों ने विपरीत परिस्थितियों में भी शिक्षा का दामन नहीं छोड़ा। अमन पहले कैटरिंग के काम में लगा रहता था और गोलू अपने परिवार की मुर्गी पालन में मदद करता था। लेकिन स्कूल में नामांकन के बाद इन दोनों ने काम और पढ़ाई में संतुलन बनाते हुए मेहनत की और कक्षा 6 में शानदार प्रदर्शन कर अ ग्रेड प्राप्त किया। आज वे कक्षा 7 में प्रवेश कर चुके हैं।

बालक शान को अपने पिता के साथ फेरी लगाने के कारण पढ़ाई का समय नहीं मिल पाता था। चेतना संस्था की पहल से जब उसे स्कूल में दाखिला मिला, तो उसने पढ़ाई को गंभीरता से लेते हुए बोर्ड परीक्षा में अ ग्रेड प्राप्त किया और आज वह विद्यालय का होनहार छात्र बन गया है।

इसी तरह बालिका भारती, जिसके पास आधार कार्ड न होने के कारण 12 वर्षों की आयु तक स्कूल में दाखिला नहीं हो सका, जब उसे दाखिला मिला तो उसने अपनी प्रतिभा से सबको चौंका दिया। भारती ने कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त कर यह सिद्ध कर दिया कि अवसर मिलने पर हर बच्चा अपनी प्रतिभा दिखा सकता है।

अन्य बच्चों ने भी बताया कि वे पहले काम करते थे और स्कूल एक दूर का सपना लगता था, लेकिन चेतना संस्था ने उन्हें दोबारा पढ़ाई से जोड़ा। चेतना संस्था के शिक्षा केंद्रों पर सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उन्हें पढ़ाया, समझाया और हौसला दिया। आज ये बच्चे अपने आचार-विचारों से विद्यालयों में शिक्षकों का दिल जीत रहे हैं और सरकारी योजनाओं का लाभ लेकर अपने भविष्य को भी सशक्त बना रहे हैं।

बालकनामा पत्रकारों ने जयपुर की 10 समुदायों कि बस्तियों में चेतना संस्था के केंद्रों पर नामांकित बच्चों की वार्षिक परीक्षा कि प्रगति की जानकारी लेने हेतु चेतना संस्था के कार्यकर्ताओं से मुलाकात की तो ज्ञात हुआ।

वर्ष 2024-25 में 'चमकते सितारे परियोजना' के अंतर्गत चेतना संस्था ने इन बस्तियों से 534 बच्चों (281 बालक, 253 बालिकाएं) का नामांकन नजदीकी 24 सरकारी विद्यालयों में सुनिश्चित कराया। इनमें से 421 बच्चों (212 बालक, 209 बालिकाएं) ने वार्षिक परीक्षा में भाग लिया, और 411 बच्चे (206 बालक, 205 बालिकाएं) सफलतापूर्वक अगली कक्षा में प्रोन्नत हुए।

विशेष रूप से 102 बच्चों ने कक्षा 5वीं (89 विद्यार्थी) और 8वीं (13 विद्यार्थी) की बोर्ड परीक्षा दी, जिसमें 43 बच्चों ने अ ग्रेड, 39 ने इ ग्रेड और 10 ने उ ग्रेड प्राप्त किया। हालांकि 9 बच्चों को हिंदी और गणित विषयों की पूरक परीक्षा में शामिल होना पड़ेगा, लेकिन यह भी उनके संघर्ष और हौसले का प्रतीक है। जीवन की कठिन परिस्थितियाँ भले ही बाधा बनें, परंतु सच्चा साहस उन्हें पार कर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

गुरुग्राम में रहने वाले सड़क और कामकाजी बच्चों की शिक्षा यात्रा भी कम प्रेरणादायक नहीं रही। शैक्षणिक वर्ष 2024-25 के दौरान चेतना संस्था ने 33 सरकारी स्कूलों में 556 स्ट्रीट-कनेक्टेड बच्चों को शिक्षा से जोड़ा। इनमें से 396 बच्चों ने वार्षिक परीक्षा दी। इन बच्चों की उपलब्धियाँ केवल अंकों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह उनकी लगन, मेहनत और जीवन की चुनौतियों से लड़ने की मिसाल हैं।

कुल 149 बच्चों (37.6%) ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किए, जिसमें 87 बालिकाएं और 62 बालक शामिल हैं। वहीं, 38 बच्चों ने 80% से अधिक अंक प्राप्त किए, जिसमें 24 लड़कियां और 14 लड़के थे। इसके अतिरिक्त, 49 बच्चों ने 50% से 59% के बीच और 23 बच्चों ने 33% से 49% के बीच अंक प्राप्त किए।

हरियाणा बोर्ड कक्षा 10 की परीक्षा में चार बच्चों ने हिस्सा लिया, सभी पास हुए। एक विद्यार्थी ने प्रथम श्रेणी (76%) और दो ने द्वितीय श्रेणी में सफलता पाई।

चेतना संस्था के निदेशक श्री संजय गुप्ता ने कहा, 'ये परिणाम सिर्फ आंकड़े नहीं हैं, बल्कि यह बच्चों की निरंतर मेहनत और उनके जीवन के संघर्षों का प्रतिबिंब हैं। हर बच्चा प्रेरणा है-जो यह दिखाता है कि यदि उन्हें सही समर्थन मिले तो वे किसी

शेष पृष्ठ 2 पर

प्यासे पक्षियों के लिए बच्चों ने की अनोखी पहल

बालकनामा रिपोर्टर: दामिनी, बातूनी रिपोर्टर: सोहीन

बालकनामा रिपोर्टर ने जयपुर की कच्ची बस्तियों का दौरा किया और सड़क एवं कामकाजी बच्चों से उनके अनुभवों और समस्याओं को जानने का प्रयास किया। इस दौरान जयसिंहपुरा खोर बस्ती के बच्चों ने बताया कि चेतना के एजुकेशन सेंटर पर तेज गर्मी से राहत देने के लिए चेतना कार्यकर्ताओं द्वारा ठंडा ग्लूकोजयुक्त पानी, ओआरएस और बिस्कुट वितरित किए गए थे। यह देख कर बच्चों को महसूस हुआ कि जिस तरह उन्हें गर्मी से राहत मिली है, उसी तरह हमें भी पक्षियों के लिए दाना-पानी की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि वे भी इस तपती गर्मी में राहत महसूस कर सकें। इस सोच के साथ बच्चों ने चेतना सेंटर की 'आपातकालीन राहत किट वितरण पहल' से प्रेरित होकर एक सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने प्यासे पक्षियों के लिए 'परिंडे' (पानी के पात्र) बनाए। बच्चों ने पुराने प्लास्टिक के डिब्बों, मटकों और बर्तनों को साफ करके उनमें रोजाना ताजा पानी भरना शुरू किया। साथ ही, पक्षियों के लिए ज्वार, बाजरा जैसे अनाज भी रखना शुरू किया, ताकि उन्हें भूख और प्यास दोनों से राहत मिल सके। इस अनुभव ने बच्चों को प्रकृति के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया। 12 साल के बालक सोहीन ने बताया 'जब पक्षी हमारे रखे पानी में चोंच डालते हैं और दाना चुगते हैं, तो एक अलग ही खुशी और संतोष का अनुभव होता है।' वहीं 13 वर्षीय बालिका साक्षी ने कहा, 'यह कार्य हमारे लिए एक नई सीख है। छोटे-छोटे प्रयासों से भी बड़े बदलाव लाए जा सकते हैं।'

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

विश्व पर्यावरण दिवस पर सड़क और कामकाजी बच्चों ने जताया पर्यावरण प्रेम

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी, बातूनी रिपोर्टर नैतिक

विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर जयपुर के जयसिंहपुरा खोर में चेतना संस्था के वैकल्पिक शिक्षा केंद्रों में एक खास आयोजन किया गया, जिसमें सड़क और कामकाजी बच्चों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। इस आयोजन का मकसद बच्चों को प्रकृति से जोड़ना और उन्हें पर्यावरण की अहमियत समझाना था। कार्यक्रम की शुरूआत बच्चों द्वारा बनाए गए रंग-बिरंगे पोस्टरों और क्राफ्ट प्रदर्शनी से हुई। बच्चों ने इन पोस्टरों में पेड़, पानी, पृथ्वी और साफ-सफाई जैसे जरूरी मुद्दों को अपने तरीके से बेहद सुंदर ढंग से दिखाया। इसके बाद बच्चों ने एक रोल प्ले किया, जिसमें कुछ बच्चे प्रदूषण फैलाने वाले किरदार बने और कुछ पर्यावरण की रक्षा करने वाले। इस प्रस्तुति से यह संदेश दिया गया कि अगर हम अभी नहीं जागे, तो आने वाले समय में हमारा पर्यावरण गंभीर संकट में पड़ सकता है। इस गतिविधि में बच्चों ने बेकार पड़ी चीजों जैसे कबाड़ और पुराने सामान से उपयोगी और सजावटी वस्तुएँ बनाई जैसे- चक्की, पंखा, कूलर, गमले और फूलों के गुलदस्ते। इसके जरिए उन्होंने यह दिखाया कि रचनात्मकता और पुनः उपयोग के जरिए भी पर्यावरण की रक्षा की जा सकती है। कार्यक्रम के अंत में बच्चों ने पौधारोपण किया और एक खास 'संकल्प पेड़' तैयार किया। इस पेड़ पर हर बच्चे ने अपने पर्यावरण से जुड़े एक-एक संकल्प लिखकर टांगा। कुछ बच्चों ने लिखा कि वे हर साल एक पेड़ लगाएंगे, कुछ ने संकल्प लिया कि वे प्लास्टिक का इस्तेमाल नहीं करेंगे और कुछ ने पानी की बचत करने की बात कही। बालक नैतिक ने बताया कि उसने नाटक में 'पृथ्वी' का किरदार निभाया। उसने कहा, 'जब लोग कचरा फैलाते हैं या पेड़ काटते हैं, तो पृथ्वी को बहुत दर्द होता है। यह मैंने महसूस किया।' वहीं बालिका सिया ने कहा, 'पेड़ और पानी हमारे जीवन के लिए जरूरी हैं। अब मैं हर साल अपने जन्मदिन पर पेड़ लगाऊंगी और उसकी देखभाल भी करूंगी।' इस तरह इस कार्यक्रम के जरिए बच्चों ने पर्यावरण के प्रति अपनी समझ को और गहरा किया एवं दूसरों को भी एक सकारात्मक संदेश दिया कि छोटे-छोटे कदम उठाकर हम सभी पर्यावरण को बचाने में अपना योगदान दे सकते हैं।

उधारी चुकाने के लिए कबाड़ में झाँकता मासूम

बालकनामा रिपोर्टर- दीपक
बातूनी रिपोर्टर- मिट्ठू

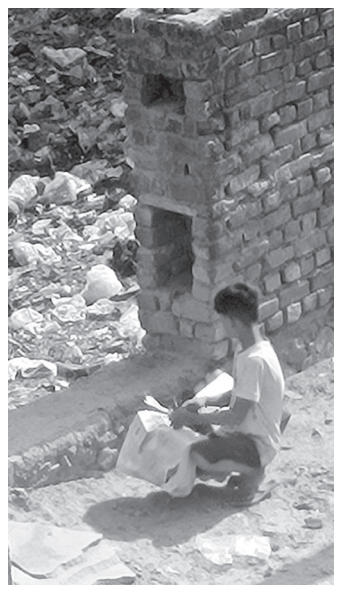

दुनिया में हर दिन न जाने कितना काम होता है और इन कामों के पीछे अक्सर इतना सबक छिपा होता है कि उसकी निशानियां कबाड़ के ढेर में तब्दील हो जाती हैं। हैरानी की बात ये है कि इस कबाड़ को उठाते अक्सर बच्चे ही नजर आते हैं। बालकनामा रिपोर्टर ने हाल ही में जयपुर की एक बस्ती का दौरा किया, जहां ऐसा ही एक दृश्य देखने को मिला। एक लगभग 12 साल का मासूम कबाड़ बीन रहा था। बातचीत करने पर उसने बताया कि वह जामडोली नामक बस्ती में रहता है और दोस्तों की संगत में आकर कबाड़ बीनने लगा है। बालकनामा पत्रकार द्वारा जब इसकी वजह पूछी गई, तो उसने बताया कि उसकी संगत बस्ती के बड़े लड़कों से हो गई, जिनके साथ रहने से खर्चा बढ़ने लगा फिर इसी खर्च को पूरा करने के लिए उसने कर्ज लेना शुरू किया। शुरूआत कुछ पैसों से हुई, पर धीरे-धीरे कर्ज बढ़ता गया। अब वह उन्हीं लड़कों के साथ मिलकर कबाड़ बीनता है ताकि उधार चुकता कर सके। अगर पैसे न दे, तो वे बड़े लड़के उसे मारते भी हैं। बालक अभी तक कभी स्कूल नहीं गया है। उसके अभिभावकों की तरफ से भी कोई खास ध्यान या देखरेख नजर नहीं आती। बच्चों का कबाड़ बीनना अब कोई चौंकाने वाली बात नहीं रही, पर हर बच्चे की अपनी एक कहानी होती है जिसमें गरीबी, संगत, पलायन और अभिभावकों की भूमिका साफ दिखाई देती है।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने पढ़ाई में लहराया परचम, अच्छे अंकों से पास होकर दिखाई शानदार सफलता

पृष्ठ 1 का शेष

भी बाधा को पार कर सकते हैं।' चेतना संस्था इस मिशन पर अडिग है कि हर बच्चे को,चाहे वह किसी भी पृष्ठभूमि से हो,गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, सुरक्षा और पोषण मिल सके ताकि वे एक उज्जवल और समान भविष्य की ओर बढ़ सकें।

वर्ष 2024-25 की वार्षिक परीक्षा पश्चिमी दिल्ली, लखनऊ और नोएडा के लिए विशेष महत्व रखती है, क्योंकि पहली बार सड़क और कामकाजी बच्चों ने संगठित रूप से परीक्षा में भाग लेकर शिक्षा के प्रति अपने नये दृष्टिकोण और आत्मविश्वास का प्रमाण दिया। यह उपलब्धि केवल इन बच्चों तक सीमित नहीं रही, बल्कि उनके परिवारों और समुदायों के लिए भी यह गर्व और प्रेरणा का क्षण बन गई।

पश्चिमी दिल्ली की दस बस्तियों में रहने वाले कुल 460 बच्चों (261 लड़के और 199 लड़कियाँ) ने इस वर्ष परीक्षा में भाग लिया। यह वास्तव में इन सभी बच्चों के लिए गौरव का क्षण था जो कभी शिक्षा से पूरी तरह कटे हुए थे। इन सभी बच्चों ने न केवल विद्यालय जाना शुरू किया, बल्कि परीक्षा में भी सफलता प्राप्त की।

सबसे सुखद बात यह रही कि सभी बच्चे परीक्षा में उत्तीर्ण हुए, जिनमें से 129 बच्चों (लगभग 39%) ने 60% से अधिक अंक अर्जित किए। ग्रेड के अनुसार देखें तो 4% बच्चों को ग्रेड अ, 31% को ग्रेड इ, 45% को ग्रेड उ, 32% को ग्रेड ऊ और 25% को ग्रेड ए प्राप्त हुआ। यह आँकड़े दर्शाते हैं कि बच्चों ने केवल परीक्षा पास नहीं की, बल्कि अपने भीतर की सीखने की क्षमता, आत्मविश्वास और अनुशासन के माध्यम से एक नया कीर्तिमान

स्थापित किया। बच्चों में शिक्षा को लेकर एक नया उत्साह देखने को मिला है। जो पहले पढ़ाई से घबराते थे, वे अब नियमित स्कूल जा रहे हैं, समय पर होमवर्क कर रहे हैं, और अपने जीवन में अनुशासन का पालन कर रहे हैं। वे साफ-सफाई का ध्यान रखते हैं, संवाद कौशल में निपुण हो रहे हैं और शिक्षकों तथा सहपाठियों के प्रति सम्मान प्रकट करते हैं। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग से बच्चे केवल शैक्षणिक रूप से नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक रूप से भी सशक्त बन सकते हैं। कुछ बच्चों की प्रतिक्रियाएँ इस परिवर्तन को और सजीव बनाती हैं:

● 'मैंने पहली बार परीक्षा दी और पास भी हो गई। अब पढ़ाई मुश्किल नहीं लगती क्योंकि मैम ने हमें बहुत आसान तरीके से समझाया।'

- अनु, कक्षा 9

● 'मैं पहले कभी स्कूल नहीं गई थी, लेकिन अब मैं रोज स्कूल जाती हूँ। मुझे अपने दोस्तों के साथ पढ़ाई करना बहुत अच्छा लगता है।'

- नीलम, कक्षा 9

● 'अब मुझे लगता है कि मैं भी कुछ बन सकता हूँ।'

- शिवम, कक्षा 6

● 'पहले मुझे जवाब देने में डर लगता था, लेकिन अब मैं आत्मविश्वास के साथ हाथ उठाकर जवाब देती हूँ।'

- सुहाना, कक्षा 8

यह सकारात्मक परिवर्तन चेतना संस्था के सतत प्रयासों का प्रतिफल है। उनका यह प्रयास बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा से जोड़ने, उन्हें सक्षम बनाने और भविष्य के लिए तैयार करने में सहायक सिद्ध हो रहा है। अब आवश्यक है कि इन बच्चों को निरंतर सहयोग, संसाधन और प्रेरणा मिलती रहे ताकि वे केवल पास न हों, बल्कि उत्कृष्टता की दिशा में भी अग्रसर हो सकें।

लखनऊ में चेतना संस्था ने 13 सरकारी और 6 निजी विद्यालयों में 48 स्ट्रीट-कनेक्टेड बच्चों (29 लड़कियाँ और 19 लड़के) को औपचारिक शिक्षा से जोड़ा। इन बच्चों में से सभी ने वार्षिक परीक्षा दी और 30 बच्चों (62.5%) ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किए।

खास बात यह रही कि इस समूह में 22 लड़कियों ने 60% से अधिक अंक हासिल किए, जबकि 6 बच्चों ने 80% से भी अधिक अंक प्राप्त किए (4 लड़कियाँ और 2 लड़के)।

ये परिणाम इस बात का प्रमाण हैं कि सुरक्षित और प्रेरणादायक शैक्षिक वातावरण बच्चों के विकास में कितना महत्वपूर्ण होता है। इसके अतिरिक्त, 9 बच्चों ने 50% से 59% के बीच अंक अर्जित किए। नोएडा में 'नन्हे परिंदे' कार्यक्रम के अंतर्गत चेतना ने 2024-25 शैक्षणिक सत्र में 385 स्ट्रीट-कनेक्टेड बच्चों को 20 सरकारी स्कूलों में दाखिला दिलाया। इन बच्चों में से 295 बच्चों ने वार्षिक परीक्षा में भाग लिया।

इन परीक्षाओं में 108 बच्चों (36.7%) ने 60% से अधिक अंक प्राप्त किए, जिसमें 65 लड़कियाँ और 43 लड़के शामिल हैं। 24 बच्चों ने 80% से अधिक अंक प्राप्त किए (13 लड़कियाँ और 11 लड़के), जबकि 34 बच्चों (12 लड़के और 22 लड़कियाँ) ने 50% से 59% के बीच अंक प्राप्त किए। 117 बच्चों (55 लड़के और 62 लड़कियाँ) ने 33% से 49% अंक प्राप्त कर दिखाया कि उनकी मेहनत और निरंतर प्रयास उन्हें निरंतर सफलता की ओर ले जा रहे हैं।

नोएडा की एक 16 वर्षीय छात्रा रूबी (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वह कक्षा 9 में पढ़ रही है। पहले उसके पिता उसे गाँव ले जाते थे, जिससे पढ़ाई में रुकावट आती थी, लेकिन जब स्कूल में पेरेंट्स मीटिंग हुई और शिक्षक-शिक्षिकाओं ने पिता को समझाया, तब घर का माहौल बदला। इस वर्ष गाँव कम जाना हुआ, पढ़ाई में ध्यान केंद्रित हुआ और परिणामस्वरूप पाँच प्रतिशत अंकों की वृद्धि हुई। गणित जैसे कठिन विषय में भी उसका प्रदर्शन बेहतर हुआ।

एक 13 वर्षीय बालक राजा (परिवर्तित नाम) ने साझा किया कि पहले वह साइकिल पंचर की दुकान में अपने पिता की मदद करता था और स्कूल में पीछे बैठता था। इससे पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे पाता था, लेकिन अब वह आगे बैठता है, अध्यापिका से प्रशंसा मिलती है और कक्षा का मॉनिटर भी बना है। यह उसके जीवन में बड़ा बदलाव है। अगर आपने इस खबर को ध्यान से पढ़ा हो तो आप पाएंगे की इन सभी किस्सों में एक समानता है की यदि बच्चों को जब सही माहौल, मार्गदर्शन और सहयोग मिलता है, तो वे असंभव को संभव कर दिखाते हैं। सड़क और कामकाजी बच्चों की यह शैक्षणिक यात्रा सिर्फ परीक्षा उत्तीर्ण करने तक सीमित नहीं है अपितु यह उनकी जिजीविषा, क्षमता और भविष्य को सँवारने की बात है। यह खबर हर उस प्रयास का परिणाम है जो उन्हें शिक्षा, अधिकार, अवसर और आत्मसम्मान देता है।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पानी की तलाश में भटकता बचपन

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर अजय

जयपुर की बगराना कच्ची बस्ती में रहने वाले बच्चों को आज भी बुनियादी सुविधाओं के लिए संघर्ष करना पड़ रहा है। इस बस्ती में पीने के साफ पानी की गंभीर समस्या सामने आ रही है, जिससे बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षा सीधे तौर पर प्रभावित हो रहे हैं।बस्ती के आसपास पीने के पानी का कोई स्थाई इंतजाम नहीं है। यहां से करीब एक किलोमीटर दूर एक हेडपम्प लगा हुआ है, जहां से बच्चे रोज पैदल चलकर पानी भरने जाते हैं। यह कार्य न केवल शारीरिक रूप से थकाऊ है, बल्कि असुरक्षित भी है, खासकर जब यह छोटे बच्चों द्वारा किया जाता है। हेडपम्प के आस-पास सफाई की कोई व्यवस्था नहीं है। वहां गंदगी फैली रहती है, जिससे पानी के संक्रमित होने का खतरा बना रहता है। इससे बच्चों के बीमार पड़ने की आशंका लगातार बनी रहती है। 13 वर्षीय अजय कहते है, 'हेडपम्प के पास इतनी गंदगी है कि कभी-कभी बदबू से उल्टी आने लगती है, लेकिन हमारे पास कोई और विकल्प नहीं है।' यह स्थिति बच्चों की मजबूरी के साथ उनके संघर्ष और जागरूकता को भी दशार्ती है। कई बच्चों ने मिलकर यह मांग उठाई है कि बस्ती में ही स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल की सुविधा उपलब्ध कराई जाए, ताकि वे समय पर स्कूल जा सकें और बीमारियों से भी बच सकें।यदि जल्द ही प्रशासन इस दिशा में कोई ठोस कदम नहीं उठाता है, तो इन बच्चों का भविष्य खतरे में पड़ सकता है। बुनियादी सुविधाओं की यह कमी समाज की उन कमजोर परतों की वास्तविकता को सामने लाती है, जिन्हें आज भी विकास की मुख्यधारा से जोड़ने की जरूरत है।

सड़क निर्माण होने से आई बच्चों के चेहरे पर मुस्कान, खेलना हुआ और आसान

बातूनी रिपोर्टर साधना व रिपोर्टर किशन

हम अपनी बस्तियों और गली-मोहल्लों में रोजाना कई परेशानियों का सामना करते हैं। हर कोई चाहता है कि ये समस्याएं जल्द से जल्द खत्म हो जाएं। लेकिन ये कब ठीक होंगी, यह कोई नहीं जानता क्योंकि ऐसे काम बस्ती के प्रधान के माध्यम से ही हो सकते हैं। आमतौर पर इन समस्याओं की सुनवाई नहीं होती, लेकिन चुनावों के समय कुछ हल जरूर निकलता है। हाल ही में जब बालकनामा के पत्रकार बस्ती में पहुंचे, तो वहां का नजारा कुछ बदला-बदला था। कई बच्चे खुशी से झूम रहे थे, तो कुछ अपने घर के सामने खेलते नजर आए।

जब पत्रकारों ने इस खुशी की वजह जाननी चाही, तो एक 13 वर्षीय बालिका ने बताया, 'हम पश्चिम दिल्ली की इस बस्ती में रहते हैं, जहां 500 से ज्यादा झुग्गियाँ हैं। इस साल की होली से पहले तक हमारी बस्ती की लगभग सभी गलियाँ बुरी तरह टूटी हुई थीं। हर तरफ गड्ढे थे, जिनमें गंदा पानी भरा रहता था। मच्छर, कीड़े और

बदबू के कारण बच्चे बीमार पड़ते रहते थे।' उसने आगे बताया, 'बस्ती के चारों ओर 10 से ज्यादा गहरे गड्ढे थे, जो असल में खुले गटर थे। रात में अक्सर लोग उनमें गिर जाते थे। गाड़ियाँ तो दूर, पैदल चलना भी मुश्किल हो गया था। छोटे-छोटे बच्चों के पाँव में टूटे पत्थर चुभ जाते थे, जिससे हम सब परेशान रहते थे। हम बच्चों ने कई बार प्रधान से कहा कि सड़क बनवा दीजिए, लेकिन उन्होंने हर बार हमारी बात अनसुनी कर दी।' फिर जैसे ही होली से पहले चुनाव की चर्चा शुरू हुई, बस्ती के सभी लोगों ने एकजुट होकर सड़क की माँग दोहराई। इस बार प्रधान ने सबकी बात सुनी और कहा, 'अगर आप लोग मुझे वोट देंगे तो मैं सड़क बनवा दूँगा।'

लोगों ने हामी भर दी, और चुनाव से पहले सड़क बन गई और प्रधान जी भी चुनाव जीत गए। अब हालात काफी बेहतर हैं। बच्चे खुशी-खुशी उन नई सड़कों पर खेलते हैं। पहले जो मुश्किलें रोज की ज़िंदगी का हिस्सा थीं, वे अब पीछे छूट चुकी हैं। बच्चे कहते हैं, 'अब हमारी बस्ती की सड़कें भी किसी अच्छी कॉलोनी जैसी लगती हैं और हमें खेलने से कोई नहीं रोकता।'

बाजार में बीनने वाली सब्जियों से सड़क एवं कामकाजी बच्चों के घरों में बनता है खाना

बातूनी रिपोर्टर साहिल व रिपोर्टर किशन

'इस संसार में रहना है तो पेट भी पालना ही पड़ेगा।' यह कहावत नोएडा के उस सजे-धजे बाजार में सच होती नजर आई, जहां बचपन अपने मासूम कंधों पर ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाए दिखा। हाल ही में जब बाल पत्रकारों की एक टीम ने इलाके का दौरा किया, तो उन्होंने देखा कि कई छोटे-छोटे बच्चे दुकानदारों की सब्जियां भारी ट्रकों से उतरवा रहे थे और उन्हें दुकानों तक पहुँचा रहे थे। पत्रकारों ने मौके पर मौजूद कुछ बच्चों से बात की और जानने की कोशिश की कि वे इस उम्र में क्यों और कैसे यह काम कर रहे हैं। 12 वर्षीय एक बालक रमेश (परिवर्तित नाम) ने बताया कि वे सभी बच्चे अपने माता-पिता के साथ

किराए के मकानों या झुग्गियों में रहते हैं। चूंकि उनके माता-पिता सुबह-सवेरे काम पर निकल जाते हैं, इसलिए ये बच्चे दिन के दो-ढाई घंटे इस सब्जी मार्केट में दुकानदारों की मदद करने आ जाते हैं। इसके बदले में उन्हें खाने की कुछ चीजें या सब्जियां मिल जाती हैं, जिसे वे अपने घर ले जाते हैं। मार्केट में ज्यादातर सब्जी की दुकानें हैं और सुबह 10 से 12 बजे के बीच ट्रकों से सब्जियां पहुंचती हैं। बच्चों को यह समय पता होता है और वे खुद-ब-खुद वहां मौजूद हो जाते हैं ताकि ट्रकों से सब्जियां उतारकर दुकानदारों की मदद कर सकें। शाम के समय दुकानें बंद होने तक भी कुछ बच्चे वहीं रुके रहते हैं ताकि दुकान समेटने में भी हाथ बॅटा सकें। बच्चों ने बताया कि यह काम उन्हें पैसों की जगह सब्जियों के रूप में 'इनाम' देता है। दुकानदार अक्सर ऐसी सब्जियां जो बाहर से पिचकी हुई या हल्की सी खराब नजर आती हैं, लेकिन अंदर से ठीक होती हैं, उन्हें फेंक देते हैं। ये बच्चे उन्हीं सब्जियों को बीनकर अपने घर ले जाते हैं और इसी से उनके घर में रोज की सब्जी बन जाती है। एक बच्चे ने भावुकता से बताया, 'अगर हम ये सब्जियां न लाएं, तो कई बार घर में सब्जी नहीं बन पाती और हमें नमक या अचार से रोटी खानी पड़ती है।' यह घटना बताती है की जहां बचपन पेट की भूख से बड़ा हो जाता है। ये बच्चे स्कूल की जगह सब्जी मंडी में अपना भविष्य बीन रहे हैं। समाज, प्रशासन और नीति-निमार्ताओं को यह सोचने की सख्त जरूरत है कि आखिर कब तक हमारे देश का बचपन ऐसे बोझ ढोने को मजबूर रहेगा?

जब जिम्मेदारियां ही बन जाती है बचपन की जंजीर

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर

गुड़गांव स्थित एमार टावर कि नजदीकी बस्ती में उस समय एक चौंकाने वाला वाकया सामने आया जब बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर बच्चों से बातचीत करने के लिए वहां पहुंचे।

बातचीत के दौरान बच्चों ने बताया कि बस्ती के पास एक छोटा बच्चा रोजाना बिरयानी की दुकान पर काम करता है। बताया गया कि वह बच्चा महज 12 से 13 साल का है और प्रतिदिन दुकान चला रहा है।

इस सूचना के आधार पर रिपोर्टर राजकिशोर खुद उस स्थान पर पहुंचे और उन्होंने देखा कि सच में एक नाबालिग बच्चा दुकान पर मौजूद था और ग्राहकों को बिरयानी दे रहा था।

जब रिपोर्टर ने बच्चे से बात की, तो उसने बताया, यह मेरी दुकान नहीं है। मैं सैलरी पर काम करता हूं। यह दुकान हमारे मालिक की है, जो मुझे 4,000 से 5,000 महीना देते हैं।

बच्चे ने भावुक स्वर में आगे कहा कि वह यह काम अपने परिवार की मजबूरी के चलते करता है। उसके घर में दो छोटे भाई-बहन हैं, जो स्कूल जाते हैं और उनके स्कूल की फीस और अन्य जरूरतों के लिए वह कमाई करता है।

इसके अलावा घर का राशन, फीस और बाकी जरूरतों के लिए मैं मालिक से मिले पैसे घर पर दे देता हूं। थोड़ा-बहुत अपने पास भी रखता हूं ताकि अपनी जरूरत की चीजें ले सकूं। यह बच्चा न सिर्फ अपनी पढ़ाई से वंचित है, बल्कि बहुत कम उम्र में ही अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारियां अपने ऊपर उठाए हुए है।

जिस उम्र में बच्चों को स्कूल में होना चाहिए, खेलना चाहिए और सपने देखना चाहिए, उस उम्र में यह बच्चा जीविका के संघर्ष में उलझा हुआ है। यह मामला एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर करता है कि कैसे आज भी हमारे आसपास बाल श्रमिक मौजूद हैं, और उनका जीवन शिक्षा और बचपन से कोसों दूर हैं। जरूरत है कि ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें शिक्षा और सुरक्षा के दायरे में लाने की कोशिशें तेज की जाए, ताकि उनका बचपन फिर से लौट सके।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

सड़क और कामकाजी बच्चों ने कड़ी मेहनत और हौसले से पास की पाँचवीं की परीक्षा

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी, बातूनी रिपोर्टर दक्ष

जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में रहने वाले सड़क और कामकाजी बच्चों ने इस वर्ष पाँचवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में उल्लेखनीय सफलता हासिल की है। बालकनामा रिपोर्टर ने हाल ही में इन बस्तियों का दौरा कर उन बच्चों से बातचीत की, जिन्होंने कठिन हालातों के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में अपनी जगह बनाई है। इन बच्चों में वे शामिल हैं जो कभी होटल-ढाबों में बर्तन मांजते थे, कबाड़ बीनते थे, जीरा-बर्तन बेचते थे या फिर घरों में साफ-सफाई का काम करते थे। ऐसे कामों में दिन-रात जुटे रहने वाले बच्चों ने चेतना संस्था के सहयोग

और अपनी मेहनत के दम पर पाँचवीं बोर्ड परीक्षा में अच्छे अंक हासिल किए हैं। जब बालकनामा रिपोर्टर ने बच्चों से उनके अनुभव साझा करने को कहा, तो बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास और खुशियों की चमक देखते ही बनती थी। 12 वर्षीय दमन (परिवर्तित नाम) ने उत्साहपूर्वक बताया, 'मैं पहले जीरा-बर्तन बेचने का काम करता था। मुझे लगता था कि मैं कभी पढ़ नहीं पाऊँगा। लेकिन अब मुझे गर्व है कि मैंने बोर्ड परीक्षा पास की और मैं आगे भी पढ़ाई करना चाहता हूँ।' इसी तरह 11 वर्षीय आरती (परिवर्तित नाम) ने बताया, 'मैं सुबह-सुबह बाल्टी और झाड़ू लेकर घरों में फर्श और शौचालय साफ करने जाती थी। जब दूसरों के घर काम करती थी, तब लगता था कि क्या मैं कभी स्कूल जा पाऊँगी? लेकिन अब जब किताब खोलती हूँ और सवाल हल करती हूँ, तो खुद पर भरोसा होने लगा है। अब मैं बहुत आगे तक पढ़ना चाहती हूँ।' इन बच्चों की कहानियाँ वास्तव में संघर्ष की मिसाल हैं एवं यह भी साबित करती हैं कि अगर अवसर मिले और मार्गदर्शन सही हो, तो कोई भी बच्चा पीछे नहीं रह सकता। इन बच्चों ने न सिर्फ मेहनत और धैर्य के साथ सफलता हासिल की, बल्कि उन सभी बच्चों के लिए प्रेरणा बनें हैं जो आज भी कठिन परिस्थितियों में जी रहे हैं। यह परिणाम सभी के लिए एक संदेश है की चाहे परिस्थितियाँ कैसी भी हों, शिक्षा की ओर बढ़ाया गया एक कदम भविष्य को बदल सकता है।

पढ़ाई छोड़ कचरे के गोदाम में भविष्य तलाशता मासूम

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर इंशात

जब बालकनामा रिपोर्टर दीपक ने जयपुर के बगराना कच्ची बस्ती का दौरा किया, तो वहां एक कचरा संग्रहण गोदाम में काम करता हुआ एक 13 वर्षीय बालक आमिर (परिवर्तित नाम) दिखाई दिया। दीपक ने आमिर से बातचीत कर उसके परिवार, शिक्षा और जीवन की चुनौतियों को समझने का प्रयास किया। आमिर ने बताया कि झुग्गी के बाहर ही उनके परिवार ने एक गोदाम बनाया है, जहां प्लास्टिक और अन्य कबाड़ इकट्ठा किया जाता है। उसके माता-पिता साइकिल वाली ट्रॉली के माध्यम से आस-पास के इलाकों से कचरा बीनकर लाते हैं, और आमिर खुद गोदाम में उसकी निगरानी करता है। वह प्लास्टिक, लोहा और अन्य सामान को छांटने का काम करता है। वह तीन भाई-बहनों में सबसे बड़ा है। एक छोटी बहन और एक छोटा भाई उसके साथ रहते हैं। उनका पूरा परिवार उसी गोदाम के पास बनी एक झुग्गी में जीवन यापन करता है। उसने बताया कि गर्मियों में झुग्गी इतनी गर्म हो जाती है कि रहना मुश्किल हो जाता है, जबकि बरसात में छत टपकती है जिससे पूरा परिवार भीगता है और उन्हें भारी तकलीफ उठानी पड़ती है। जब उससे शिक्षा के बारे में पूछा गया, तो उसने बताया कि वह पास के सरकारी विद्यालय में पढ़ता था। लेकिन काम

की जिम्मेदारियों के चलते वह नियमित रूप से स्कूल नहीं जा पाता था और इसी कारण उसका नाम स्कूल से हटा दिया गया। अब वह पूरी तरह से काम में लगा हुआ है। आमिर की यह कहानी केवल उसकी नहीं, बल्कि ऐसे सैकड़ों बच्चों की है जो बचपन में ही जीवन की कठोर सच्चाइयों से जूझते हैं। काम और शिक्षा के बीच फँसे ये बच्चे न तो पूरी तरह श्रमिक बन पाते हैं और न ही विद्यार्थी। उनके पास न तो सुरक्षित आवास है, न पर्याप्त भोजन, और न ही शिक्षा की निरंतरता। समाज और प्रशासन को चाहिए कि ऐसे बच्चों की पहचान कर उन्हें सुरक्षित जीवन, सतत शिक्षा और सामाजिक संरक्षण के दायरे में लाया जाए।

माता-पिता की गैरमौजूदगी में अपराध की ओर बढ़ता बचपन

बातूनी रिपोर्टर अमन व रिपोर्टर किशन

नोएडा के एक गांव में हाल ही में 'बढ़ते कदम' टीम की मुलाकात कुछ बच्चों से हुई, जहां बातचीत के दौरान एक चिंताजनक घटना सामने आई। यह घटना बच्चों की मासूमियत, गलत दिशा में जा रही संगत और माता-पिता की अनुपस्थिति के बीच बढ़ते जोखिमों के बारे में थी।

12 वर्षीय राहुल (परिवर्तित नाम) ने टीम को बताया कि कुछ दिन पहले बस्ती के पास रहने वाले दो बच्चों ने एक मॉल के बाहर खड़ी साइकिल चोरी कर ली थी। उन बच्चों के माता-पिता सुबह से ही काम पर निकल जाते हैं, जिससे वे दिनभर बिना किसी निगरानी के इधर-उधर घूमते रहते हैं। एक दिन, मॉल के पास पहुंचने पर, उन्होंने वहां खड़ी एक साइकिल देखी जो उन्हें पसंद आ गई। मौका पाकर वे साइकिल लेकर अपने घर के पास आ गए और पूरे दिन उसका उपयोग करते रहे।इन बच्चों ने साइकिल को बेचने की भी कोशिश की और आस-पास के अन्य बच्चों से इसे खरीदने को कहा, पर ज्यादातर बच्चों ने मना कर दिया।

इस घटना की जानकारी तब सामने आई जब साइकिल के असली मालिक ने मॉल के बाहर साइकिल न पाकर सीसीटीवी कैमरे चेक कराए और उसमें बच्चों की तस्वीरें सामने आईं। इन तस्वीरों की मदद से वह व्यक्ति बच्चों की तलाश में निकल पड़ा और काफी खोजबीन के बाद उन्हें पास की एक झुग्गी बस्ती में साइकिल चलाते हुए पाया। साइकिल मिलने पर वह व्यक्ति काफी नाराज हुआ, बच्चों को डांटा और उन्हें उनके घर ले गया। बाद में बच्चों के माता-पिता को काम से बुलाया गया और जब उन्हें पूरी घटना की जानकारी हुई, तो उन्होंने माफी मांगी और साइकिल लौटाई। यह घटना वाकई कई सवाल खड़े करती है। एक ओर जहां बच्चों में अच्छे-बुरे की समझ अभी पूरी तरह विकसित नहीं होती, वहीं दूसरी ओर अभिभावकों की गैरमौजूदगी और समाज में फैली गलत संगत उन्हें अपराध की ओर धकेल सकती है।

ऐसे में यह जरूरी है कि माता-पिता बच्चों के विकास के दौरान उनके व्यवहार और संगत पर विशेष ध्यान दें। समाज और अभिभावकों दोनों को यह समझना होगा कि बच्चों को केवल भोजन और शिक्षा ही नहीं, बल्कि सही मार्गदर्शन और समय पर देखरेख की भी उतनी ही आवश्यकता है।

नादानी में कैसे खराब किए दाँत?

रिपोर्टरः बातूनी रिपोर्टर तनुजा और रिपोर्टर किशन

यह कहावत तो आपने सुनी ही होगी– ₹किसी भी चीज का प्रयोग नियम के अनुसार करना चाहिए।₹ यह बात बच्चों पर भी उतनी ही लागू होती है जितनी बड़ों पर। पश्चिम दिल्ली की कुछ बस्तियों में जब पत्रकारों की टीम बच्चों से मिलने पहुँची, तो 8 वर्ष की एक बालिका से भेंट हुई। बातचीत के दौरान पत्रकारों का ध्यान उसके दाँतों की ओर गया, जो काफी गंदे थे और उनमें कीड़े लग चुके थे।

जब पत्रकारों ने बालिका से इस बारे में बात की, तो उसने विस्तार से बताया, ₹हम बिहार के रहने वाले हैं और वर्तमान में अपनी मामी के साथ पश्चिम दिल्ली की एक बस्ती में रह रहे हैं। यहाँ हमें आए हुए लगभग दो महीने हुए हैं। इससे पहले हम गाँव में अपनी माता जी के साथ रहते थे। पर मेरी एक बहुत बुरी आदत है – मुझे मीठा और चॉकलेट बहुत पसंद है। जब भी घर से पैसे मिलते थे, मैं सीधे दुकान पर जाकर टॉफी-बिस्किट लेती थी और ज्यादा मात्रा में खा लेती थी। इसी कारण मेरे दाँतों में कीड़े लग गए।₹

बालिका ने बताया कि गाँव में एक रुपये में चार टॉफियाँ मिलती थीं, और वह अक्सर अधिक मात्रा में खाया

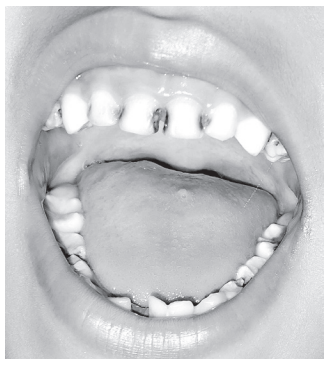

करती थी, जिससे दाँतों की यह हालत हो गई। जब दाँत बहुत ज्यादा खराब हो गए, तो उसकी माताजी ने गाँव के डॉक्टर को दिखाने की कोशिश की, लेकिन इलाज ठीक से नहीं हो पाया। इसलिए अब वह दिल्ली में अपनी मामी के पास रहकर इलाज करवा रही है। कुछ दाँत अब ठीक हो चुके हैं, और बाकी के लिए दवाई चल रही है।

बालिका ने यह भी बताया, ₹मैं कोलगेट या दाँत साफ करने की चीजें इस्तेमाल नहीं करती थी, इसलिए भी दाँतों में कीड़े लग गए।₹

पत्रकारों ने बालिका को समझाया कि रोज सुबह और रात को नियमित रूप से दाँत साफ करें, डॉक्टर की दवाई लें और मीठी चीजों का सेवन कम करें। इससे दाँत जल्दी ठीक होंगे और भविष्य में भी स्वस्थ रहेंगे।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

काम के बर्तनों में उलझते नन्हे हाथ और कुछ अधूरे सपने

बालकनामा रिपोर्टर दीपक,
बातूनी रिपोर्टर नितिन

जयपुर की कच्ची बस्तियों में जब बालकनामा रिपोर्टर पहुँचे, तो उन्हें सड़क और कामकाजी बच्चों की ज़िंदगी की झलक देखने को मिली। एक ऐसी ज़िंदगी जहाँ बचपन से पहले जिम्मेदारियाँ आती हैं और सपनों के लिए संघर्ष करना रोजमर्रा की आदत बन जाती है। ऐसी ही एक कहानी है जामडोली कच्ची बस्ती में रहने वाले 13 वर्षीय सुमित (परिवर्तित नाम) की। सुमित हर सुबह 9 बजे से लेकर शाम 5 बजे तक एक होटल में बर्तन धोने का काम करता है और इस काम के बदले उसे महीने के 2000 रुपये मिलते हैं। दिनभर की थकावट उसके नन्हे हाथों में झुर्रियों के रूप में साफ झलकती है पर उसकी आँखों में आज भी चमक है तो एक साइकिल और एक मोबाइल फोन की, जिसे वह खुद की मेहनत से पूरा करना चाहता है। जब रिपोर्टर ने उससे पूछा कि वह इतनी कम उम्र में यह काम क्यों करता है? तो उसने सादगी से जवाब दिया ₹मुझे अपने लिए एक साइकिल और मोबाइल फोन चाहिए। मम्मी-पापा नहीं दिला सकते, इसलिए मैं खुद पैसे जोड़ रहा हूँ। सुमित के परिवार की आर्थिक स्थिति सीमित है। वह बताता है, हम पांच भाई-बहन हैं। मेरी माता जी आसपास के घरों में झाड़ू-पोछा और खाना बनाने का काम करती हैं, और पिताजी दालमोठ बनाकर बेचते हैं। घर का खर्च मुश्किल से चलता है। सुमित अकेला नहीं है। जयपुर की इन बस्तियों में ऐसे कई बच्चे हैं जो अपने छोटे-छोटे सपनों को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े बोझ ढो रहे हैं। कुछ होटल में काम करते हैं, कुछ रेड लाइट सिग्नल पर सामान बेचते हैं, तो कुछ निर्माण स्थलों पर मजदूरी करते हैं। ये सभी बच्चे बचपन से पहले ही जीवन की सच्चाइयों से रूबरू हो जाते हैं।इन बच्चों की सच्चाई हमें एक अहम सवाल पूछने पर मजबूर करती हैं कि क्या किसी बच्चे का बचपन इतना कठिन होना चाहिए? क्या एक साइकिल या मोबाइल फोन जैसा साधारण सपना, बच्चों के लिए खुद के श्रम से पूरा करने की मजबूरी बन जाना, हमारी सामूहिक विफलता नहीं है? बालकनामा के जरिए ऐसे बच्चों की आवाज सामने लाना, न केवल उनके संघर्षों को रेखांकित करता है, बल्कि यह भी बताता है कि समाज और व्यवस्था को अब और अधिक

संवेदनशील, जवाबदेह और सक्रिय होने की जरूरत है ताकि हर नितिन को बचपन मिले, सपनों के साथ जीने का हक मिले।

कठपुतली, पोस्टर और रैली के जरिए बच्चों ने दिया बाल श्रम के खिलाफ संदेश

बालकनाम रिपोर्टर दीपक,
बातूनी रिपोर्टर कान्हा

जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों में बाल श्रम निषेध दिवस के अवसर पर सड़क और कामकाजी बच्चों हेतु विशेष जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बाल श्रम के खिलाफ बच्चों को शिक्षित करना, उनके अधिकारों के प्रति जागरूक बनाना और शिक्षा की महत्ता को बताना था। इस अवसर पर बच्चों की सक्रिय भागीदारी के साथ कई रचनात्मक और रोचक गतिविधियाँ आयोजित की गईं। बच्चों ने बाल श्रम के खिलाफ पोस्टर बनाए, जिनमें उनके विचार और संवेदनाएं स्पष्ट रूप से झलक रही थीं। इसके बाद एक प्रभावशाली कठपुतली नाटक प्रस्तुत किया गया, जिसमें एक बालक और बालिका के माध्यम से बाल श्रम की मार्मिक कहानी को दशार्या गया। नाटक में यह दिखाया गया कि कैसे स्कूल की जगह होटल में काम करना एक बच्चे के पूरे बचपन को छीन लेता है। नाटक ने बच्चों और समुदाय के बीच यह संदेश स्पष्ट रूप से पहुंचाया कि बाल श्रम न केवल शिक्षा, बल्कि स्वास्थ्य, आत्मसम्मान और भविष्य के सपनों को भी बाधित करता है। कार्यक्रम के दौरान कविता पाठ और भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित की गईं, जिनमें बच्चों ने बाल अधिकारों, शिक्षा के महत्व और बाल श्रम के दुष्परिणामों पर अपने विचार साझा किए। बच्चों की आवाज में जहां अपने अनुभवों का दर्द था, वहीं आशा और बदलाव की झलक भी साफ दिखाई दी। कार्यक्रम की एक और अहम कड़ी रही बाल श्रम के विरोध में निकाली गई जनजागरूकता रैली। रैली में बच्चों ने नारे लगाए 'काम नहीं, हमें शिक्षा चाहिए', 'बाल मजदूरी पर रोक लगाओ', जैसे नारों ने माहौल को ऊर्जा और संकल्प से भर दिया। इस रैली का उद्देश्य समुदाय में यह स्पष्ट संदेश देना था कि हर बच्चे को पढ़ने, खेलने और अपने सपनों को जीने का अधिकार है। इसके अलावा, बच्चों ने बाल श्रम विभाग को पत्र भी लिखे, जिनमें उन्होंने अपनी बातें और सुझाव साझा किए। खोर बस्ती की 13 वर्षीय सिया, जिसने कठपुतली नाटक में हिस्सा लिया, ने कहा, 'जब मैंने उस बालिका की भूमिका निभाई जिसे स्कूल छोड़कर काम पर जाना पड़ा, तो मुझे अपना पुराना समय याद आ गया। आज यह सब करना अच्छा लगा क्योंकि अब हम अपनी आवाज उठा पा रहे हैं। वहीं 14 साल के बालक कान्हा ने बताया, मैंने भी बाल श्रम विभाग को पत्र में लिखा कि जो बच्चे स्कूल छोड़कर मजदूरी कर रहे हैं, उनके लिए कोई योजना बनाएं ताकि वे भी मेरी तरह स्कूल जा सकें। यह कार्यक्रम बच्चों के लिए एक मंच बना, जहां वे अपनी बात कह सके एवं समुदाय और संबंधित विभागों के लिए भी एक महत्वपूर्ण संकेत था कि बच्चे अब जागरूक हो रहे हैं और वे अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाने को तैयार हैं।

बच्चों की जिंदगी से खिलवाड़ कर रही हैं फेंकी हुई सिरिंजें

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर,
बातूनी रिपोर्टर सुमित

जलवायु बस्ती में रहने वाले बच्चों की जिंदगी इन दिनों एक गंभीर और अदृश्य खतरे से गुजर रही है। जब बालकनामा के रिपोर्टर राजकिशोर हालात जानने के लिए बस्ती पहुँचे, तो वहां के बच्चों ने चौंकाने वाली सच्चाई बताई।

बच्चों ने बताया कि उनकी बस्ती के पास गंदे पानी का एक बड़ा भरा हुआ इलाका है, जहां वे खेलने जाते हैं। इस गंदे पानी में अक्सर इस्तेमाल की हुई सिरिंजें पड़ी होती हैं, जिन्हें बच्चे उठाकर अपने घर ले आते हैं।

बच्चों का कहना है कि ये सिरिंज डॉक्टरों द्वारा मरीजों को इंजेक्शन देने के बाद वहीं फेंक दी जाती हैं। बच्चे इन सिरिंजों को धोते हैं और उनमें गंदा पानी भरकर एक-दूसरे पर फेंकते हैं। यह खेल उनके लिए खतरनाक साबित हो सकता है, क्योंकि उन्हें यह जानकारी ही नहीं है कि ये सिरिंज पहले किसी संक्रमित व्यक्ति के शरीर में उपयोग की गई हो सकती हैं।

एक बच्चे ने बताया कि एक बार खेल-खेल में एक सिरिंज की सुई एक अन्य बच्चे को चुभ गई, जिससे उसे तेज दर्द हुआ और खून निकलने लगा। डर और घबराहट के बीच उसके माता-पिता उसे तुरंत नजदीकी डॉक्टर के पास लेकर गए, जिसके बाद उसका इलाज संभव हो सका।

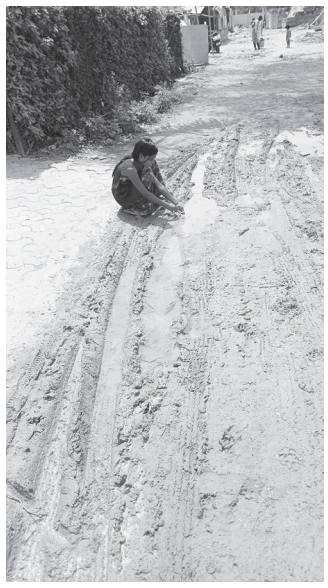

हालांकि वह बच्चा अब ठीक है, लेकिन यह घटना वहां के अन्य बच्चों के लिए चेतावनी बन गई है। इस पूरी स्थिति ने यह साफ कर दिया है कि जलवायु बस्ती के बच्चे केवल अस्वच्छ और असुरक्षित पर्यावरण में जीने को मजबूर नहीं हैं, बल्कि वे संक्रमित वस्तुओं के संपर्क में आकर गंभीर बीमारियों के जोखिम का भी सामना कर रहे हैं।

अब यह जरूरी हो गया है कि प्रशासन, स्वास्थ्य विभाग और संबंधित संस्थाएं इस ओर तुरंत ध्यान दें, ताकि बच्चों को सुरक्षित वातावरण और सही दिशा मिल सके।

झुग्गियों में सीवर का पानी बना बच्चों के लिए बीमारी और परेशानियों का सबब

बालकनामा रिपोर्टर रितिका,
बातूनी रिपोर्टर खुशी

नाथूपुर की एक कम्युनिटी में जब बालकनामा रिपोर्टर रितिका ने हाल ही में दौरा किया, तो वहां की स्थिति बेहद चिंताजनक और पीड़ादायक नजर आई। बस्ती में जगह-जगह सीवर का गंदा पानी जमा था, जिससे बदबू, कीचड़ और मच्छरों की भरमार हो गई थी। बस्ती में रहने वाली 11 वर्षीय मुस्कान (परिवर्तित नाम) ने बताया, यहां सीवर के गंदे पानी से हमें बहुत परेशानी होती है। कई बार मकान मालिक से शिकायत की, लेकिन वो सुनते ही नहीं। उल्टा कहते हैं कि तुम्हें दिक्कत है तो खुद करवाओ, या मकान खाली कर दो। मुस्कान का यह भी कहना है कि अब मकान मालिक हर महीने 1000 रुपये ज्यादा किराया मांगते हैं, फिर भी सफाई की कोई व्यवस्था नहीं की जाती।बस्ती की हालत यह है कि सीवर के गंदे पानी के कारण छोटे-छोटे बच्चे अक्सर बीमार पड़ जाते हैं। बुखार, खांसी और त्वचा संबंधी समस्याएं आम हो गई हैं, जिससे वे स्कूल, आंगनबाड़ी केंद्र और ट्यूशन नहीं जा पाते।

रास्तों में फैले कीचड़ के कारण बच्चे फिसलकर गिर जाते हैं, और खुले सीवर में गाड़ियां भी फँस जाती हैं। स्कूल जाते समय अगर कोई वाहन पास से गुजरता है, तो उसमें उछला हुआ गंदा पानी बच्चों के ऊपर गिरता है, जिससे वे गंदे और अस्वच्छ होकर स्कूल पहुंचते हैं। मुस्कान बताती है, रात में मच्छर बहुत काटते हैं, नींद भी नहीं आती। कोई भी यहां की सफाई नहीं करता। यह स्थिति बताती है कि बस्ती के बच्चे दोहरी मार झेल रहे हैं, एक तरफ अस्वच्छता से जुड़ी स्वास्थ्य समस्याएं और दूसरी तरफ शिक्षा से लगातार दूरी। यह जरूरी है कि स्थानीय प्रशासन और संबंधित विभाग इस समस्या की ओर गंभीरता से ध्यान दें और बच्चों को एक सुरक्षित, साफ-सुथरा और सम्मानजनक वातावरण प्रदान करें।

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

पलायन बन रहा सड़क और कामकाजी बच्चों की पढ़ाई में सबसे बड़ी बाधा

बालकनामा रिपोर्टर सबेरुल, बातूनी रिपोर्टर सुल्तान

गुरुग्राम के वजीराबाद का बस अड्डा, जो सामान्य दिनों में अपेक्षाकृत शांत रहता है, आज असामान्य रूप से भीड़ से भर गया है। बच्चों के कंधों पर छोटे-छोटे बैग लटक रहे हैं, महिलाएं सिर पर गठरियां संभालती चल रही हैं और पुरुष ट्रकों व बसों की छतों पर चढ़ते दिखाई दे रहे हैं। यह दृश्य केवल एक सामान्य यात्रा का नहीं, बल्कि एक सामाजिक-आर्थिक मजबूरी से उपजा 'पलायन' है। हर वर्ष जैसे ही गर्मियों का पारा 45 डिग्री सेल्सियस के पार पहुंचता है, वैसे ही गुरुग्राम और उसके आसपास के इलाकों में दिहाड़ी मजदूरी करने वाले हजारों परिवार अपने मूल गांवों की ओर पलायन कर जाते हैं। इस बार वजीराबाद से निकले परिवारों की संख्या चिंताजनक रूप से अधिक है। इसके पीछे सिर्फ गर्म मौसम नहीं, बल्कि बढ़ती बेरोजगारी, लगातार महंगी होती जीवनशैली और काम की अस्थिरता जैसे कारण जिम्मेदार हैं। इस पलायन की सबसे बड़ी कीमत वे मासूम बच्चे चुका रहे हैं, जिनकी शिक्षा बार-बार बाधित हो रही है। जिन स्कूलों में उन्होंने पढ़ाई शुरू की होती है, उन्हें अचानक बीच सत्र में ही छोड़ना पड़ता है। गांव पहुंचने पर स्कूल में नामांकन नहीं हो पाता और जब परिवार वापस शहर लौटता है, तो स्कूल दोबारा प्रवेश देने से कतराते हैं। इस प्रकार बच्चे धीरे-धीरे शिक्षा प्रणाली से पूरी तरह बाहर हो जाते हैं। 14 वर्षीय आजाद (परिवर्तित नाम) जो अभी कक्षा 5 में पढ़ रहा है, अपने परिवार के साथ बंगाल जा रहा है। वह कहता है, 'अभी तो गांव जा रहे हैं, शायद स्कूल में दाखिला करवा दें पापा। लेकिन जब वापस आएंगे तो यहां कौन देगा दोबारा दाखिला?' यह सवाल न केवल आजाद का है, बल्कि उन हजारों प्रवासी बच्चों का है, जो हर साल शिक्षा से छूट जाते हैं। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (फ्छए) के तहत 6 से 14 वर्ष के बच्चों को मुफ्त और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार है। सरकार द्वारा समग्र शिक्षा अभियान, मिड-डे मील योजना और डिजिटल शिक्षा जैसे कई कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। लेकिन ये योजनाएं उन बच्चों तक नहीं पहुंच पाती जो बार-बार स्थान बदलने को मजबूर होते हैं। सरकारी स्कूलों में दाखिला प्रक्रिया जटिल है और प्रवासी बच्चों को दोबारा प्रवेश देने में अक्सर अनिच्छा दिखाई जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार, 'हमारे सिस्टम में प्रवासी बच्चों के लिए कोई स्थायी समाधान नहीं है। दाखिला प्रक्रिया अटक जाती है, रिकॉर्ड नहीं बन पाते, और बच्चे ड्रॉपआउट हो जाते हैं।' पलायन के दौरान कई बच्चे बाल श्रम में भी फंस जाते हैं जैसे खेतों में काम, दुकानों में मजदूरी या निर्माण स्थलों पर श्रमिक बनकर। शिक्षा फिर पीछे छूट जाती है। हर साल हजारों बच्चे ऐसे ही मजदूरी में चले जाते हैं। इनके आंकड़े कहीं दर्ज नहीं होते, लेकिन इनकी अनुपस्थिति से शिक्षा व्यवस्था कमजोर होती है और समाज पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। स्कूल प्रशासन के पास न तो पर्याप्त संसाधन हैं और न ही रणनीति कि हर लौटे हुए छात्र को दोबारा जोड़ा जा सके। पलायन एक सामाजिक और आर्थिक सच्चाई है, लेकिन जब इसके चलते बच्चों की शिक्षा का नुकसान होता है, तो यह केवल मानवाधिकार का उल्लंघन नहीं बल्कि देश के विकास में एक गंभीर बाधा बन जाता है। हर बच्चे को शिक्षा का अधिकार है, चाहे वह कहीं भी हो। सरकार, समाज और पूरे तंत्र को इस संकट को गंभीरता से लेना होगा। जब तक प्रवासी बच्चों को शिक्षा की मुख्यधारा में शामिल नहीं किया जाएगा, तब तक 'सब पढ़ें, सब बढ़ें' जैसे नारे केवल दीवारों की शोभा बनकर रह जाएंगे।

चेतना संस्था के सहयोग से बच्चों ने पास की ओपन स्कूल परीक्षा

बालकनामा रिपोर्टर दीपक, बातूनी रिपोर्टर रोहन

बालकनामा रिपोर्टर ने हाल ही में जयपुर की विभिन्न कच्ची बस्तियों का दौरा किया, जहां उन्होंने सड़क एवं कामकाजी बच्चों से मुलाकात कर ओपन बेसिक एजुकेशन परीक्षा परिणाम के बारे में जानकारी प्राप्त की। बातचीत के दौरान बच्चों ने अपनी पढ़ाई से जुड़ी कठिनाइयों, प्रयासों और सफलता की कहानियाँ साझा की।

प्रेम नगर बस्ती के 14 वर्ष के बालक रोहन ने बताया कि उनकी बस्ती से लगभग तीन किलोमीटर दूर हाईवे के पार एक सरकारी विद्यालय स्थित है, जहाँ तक पहुंचना छोटे बच्चों के लिए मुश्किल था। इसके अलावा कई बच्चों के पास आवश्यक दस्तावेज नहीं थे और कुछ की उम्र 14 वर्ष से अधिक थी, जिससे उन्हें औपचारिक स्कूलों में प्रवेश नहीं मिल सका। बावजूद इसके, इन बच्चों की शिक्षा के प्रति जिज्ञासा और सीखने की इच्छा कभी खत्म नहीं हुई। इन्हीं परिस्थितियों को देखते हुए यहाँ चेतना संस्था के सहयोग से ओपन बेसिक एजुकेशन कार्यक्रम की शुरूआत की गई। इस पहल के तहत शिक्षा से वंचित बच्चों को एक बार फिर पढ़ाई से जोड़ा गया। बच्चों की मेहनत और संस्था के सहयोग ने मिलकर बदलाव की एक नई कहानी लिखी और इस बार 43 बच्चों ने ओपन बेसिक परीक्षा में शानदार प्रदर्शन किया। परीक्षा परिणाम घोषित होते ही बच्चों के चेहरों पर आत्मविश्वास की मुस्कान और आँखों में सपनों की चमक देखने को मिली।

15 वर्षीय दीपिका बताती हैं, पहले मैं काम पर जाती थी, पढ़ाई के लिए समय ही नहीं मिलता था। जब चेतना के सामाजिक कार्यकर्ता ने बताया कि ओपन स्कूल के जरिये पढ़ सकते हैं, तो यकीन नहीं हुआ। लेकिन अब जब मैंने कक्षा पास कर ली है तो लगता है मैं कुछ भी कर सकती हूँ।

वहीं, 12 वर्षीय मोहित ने साझा किया, मेरे पास कोई कागज नहीं था, इसलिए स्कूल में नाम नहीं जुड़ पाया। लेकिन जब पढ़ने का मौका मिला, तो मैंने उसे जाने नहीं दिया। अब मैं आठवीं पास हूँ और आगे भी पढ़ना चाहता हूँ। बालिका साक्षी कहती है मेरे आधार कार्ड में उम्र गलत थी, इसलिए स्कूल में दाखिला नहीं मिल सका। लेकिन ओपन बेसिक एजुकेशन से जुड़कर मैंने आठवीं कक्षा सफलतापूर्वक पास कर ली है। मैं बहुत खुश हूँ। यह सफलता सिर्फ एक परीक्षा पास करने की नहीं है, बल्कि यह उन बच्चों की

लगन और अवसर मिलने पर उनकी काबिलियत का प्रमाण है। यह परीक्षा परिणाम दशार्ता है कि यदि बच्चों को समय पर सही मार्गदर्शन और अवसर मिलें, तो कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित नहीं रह सकता।

गर्मी की छुट्टियों के दौरान क्रिकेट के जरिये बच्चों में पनप रही सट्टे की सोच

बातूनी रिपोर्टर रोशन व रिपोर्टर किशन

दिल्ली की कच्ची बस्तियों में इन दिनों गर्मी की छुट्टियों का एक अलग ही नजारा देखने को मिल रहा है। जहां एक ओर स्कूल बंद हैं और बच्चों को पढ़ाई से फुर्सत मिली है, वहीं दूसरी ओर इन छुट्टियों का उपयोग बच्चे खेलकूद में कर रहे हैं। हाल ही में बस्तियों के दौरे के दौरान बालकनामा के पत्रकारों की नजर कुछ बच्चों पर पड़ी, जो खुले मैदान में उत्साह से क्रिकेट खेल रहे थे। पत्रकारों ने थोड़ी देर वहां रुककर बच्चों के खेल को देखा और फिर बातचीत की। बातचीत में 12 वर्षीय बालक नूर (परिवर्तित नाम) ने बताया, स्कूल की छुट्टियां चल रही हैं और हमारी बस्ती के लगभग सभी बच्चे रोज इस मैदान में इकट्ठा होकर क्रिकेट खेलते हैं। हम सब मिलकर पैसे जोड़ते हैं और फिर मैच खेलते हैं। कभी-कभी 400 से 500 रुपये तक का मैच लग जाता है। बच्चों ने बताया कि यह रकम वे अकेले नहीं लगाते, बल्कि बस्ती के बड़े युवक भी इस खेल में भागीदारी करते हैं। वे आसपास बैठते हैं, दांव लगाते हैं और छोटे बच्चों के साथ भी आर्थिक योगदान करते हैं। बच्चों ने यह भी बताया कि कई बार बड़े युवक खेलने की कोशिश करते हैं, लेकिन उन्हें खेलने नहीं दिया जाता क्योंकि वे बार-बार गेंद खो देते हैं। बच्चों ने स्पष्ट किया, हालांकि मैच की कुल राशि में छोटे बच्चे भी 10-20 रुपये का योगदान देते हैं, लेकिन ज्यादातर रकम बड़े युवकों द्वारा लगाई जाती है। मैच खत्म होने के बाद यदि बड़े युवक जीतते हैं, तो वे बच्चों को चॉकलेट या अन्य चीजें खिलाते हैं। यह घटनाक्रम बच्चों के खाली समय के उपयोग की झलक तो देता है परन्तु इस बात की ओर भी इशारा करता है कि बच्चों का मनोरंजन धीरे-धीरे एक अव्यवस्थित 'सट्टा जैसी गतिविधि' की ओर बढ़ रहा है। इससे यह भी स्पष्ट होता है कि गर्मी की छुट्टियों में बच्चों के पास रचनात्मक गतिविधियों की कमी है और उन्हें सुरक्षित, संरचित मनोरंजन के अवसरों की सख्त जरूरत है। यह समय है कि स्थानीय प्रशासन और सामाजिक संगठन इन बच्चों के लिए खेल, कला, शिक्षा और व्यक्तित्व विकास से जुड़ी गतिविधियों की योजना बनाएं ताकि वे छुट्टियों के समय का सकारात्मक और रचनात्मक उपयोग कर सकें।

CHILDREN'S HELP LINE NUMBERS

CONTACT THESE TOLL FREE NUMBERS IF YOU FACE ANY PROBLEM.

Child line Number
1098
Police Helpline Number
100

बालकनामा में बच्चों की सहमति से फोटो प्रकाशित और उनके नाम परिवर्तित किये गये हैं।

चप्पल बनाने की फैक्ट्री में खतरनाक काम करके जलता मजबूर बचपन

बातूनी रिपोर्टर एजाज व रिपोर्टर किशन

पश्चिमी दिल्ली की झुग्गी बस्तियों में रहने वाले कई सड़क और कामकाजी बच्चों को बचपन में ही ऐसी जिम्मेदारियां उठानी पड़ रही हैं, जो उनके उम्र के बिल्कुल विपरीत हैं। परिवार के आर्थिक हालात और सामाजिक परिस्थितियां उन्हें ऐसे कार्यों की ओर धकेल रही हैं, जो न केवल उनके स्वास्थ्य के लिए खतरनाक हैं, बल्कि उनके बचपन और शिक्षा को भी निगल रहे हैं। हाल ही में बालकनामा पत्रकार की टीम ने पश्चिम दिल्ली की एक बस्ती में दौरा किया और वहाँ एक 14 वर्षीय बालक गोलू (परिवर्तित नाम) से मुलाकात की, जिसने अपनी जिंदगी की कठिन सच्चाई साझा की। उसने बताया कि उसके परिवार में पांच सदस्य हैं जिसमें उसकी माँ और चार भाई हैं। पिता का निधन हो चुका है और माँ घरेलू कार्य कर घर संभालती हैं। घर की जिम्मेदारियां मुख्य रूप से दो बड़े भाइयों पर हैं, लेकिन हालात ऐसे हैं कि छोटे भाई भी किसी न किसी रूप में योगदान देने को मजबूर हैं। बालक ने बताया कि उसने कई जगह काम ढूंढने की कोशिश की, लेकिन उम्र कम होने के कारण उसे कहीं काम नहीं मिला। फिर एक दिन, बस्ती में रहने वाले एक परिचित ने उसे फैक्ट्री में काम दिलवाने की बात कही। बालक ने बिना झिझक हामी भर दी, क्योंकि उसे पता था कि काम करना उसकी मजबूरी है। वह चप्पल बनाने वाली एक फैक्ट्री में काम पर लग गया, जहाँ उसका काम था मशीन से चप्पल निकालना और डिजाइन तैयार करना। उसने बताया कि चप्पल निकालते वक्त वह इतनी गर्म होती है कि हाथ जलने का डर बना रहता है, और कई बार वह जल भी चुका है। इस खतरनाक फैक्ट्री में उसे हर दिन 12 घंटे काम करना पड़ता था, जिसके बदले में उसे 8500 मिलते थे। काम रात में होता था और सिर्फ तीन घंटे सोने की अनुमति दी जाती थी। हाल ही में, फैक्ट्री में छापे के दौरान वह किसी तरह बच तो गया, लेकिन अब उसे काम से निकाल दिया गया है। बीते 15 दिन से वह घर पर ही है और घर चलाने में मुश्किलें और बढ़ गई हैं। पत्रकारों ने बालक की बात को गंभीरता से सुनते हुए उसे समझाया कि जिम्मेदारियों को निभाना जरूरी है, लेकिन खुद की सुरक्षा और अधिकारों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। यह मामला सिर्फ एक बच्चे की व्यथा नहीं है बल्कि उन सैकड़ों-हजारों बच्चों की सच्चाई है जो अपने बचपन को खोते हुए ज़िम्मेदारियों का बोझ उठाने को मजबूर हैं। ऐसी स्थितियों में समाज और सरकार की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है कि ऐसे बच्चों को शिक्षा, संरक्षण और सुरक्षित जीवन का अवसर प्रदान किया जाए।

सड़क पर रहने वाले बच्चों को मिला अपने अधिकारों का ज्ञान,

बालकनामा रिपोर्टर रितिका,
बातूनी रिपोर्टर काजल

बालकनामा पत्रकार द्वारा चक्करपुर समुदाय, गुरुग्राम क्षेत्र में स्थित चेतना संस्था शिक्षा केंद्र का हाल ही में दौरा किया गया, जहाँ सड़क पर रहने वाले एवं कार्यरत बच्चों की स्थिति और उनकी शिक्षा से जुड़ी गतिविधियों का अवलोकन किया गया। केंद्र में बच्चों द्वारा नियमित रूप से भागीदारी की जाती है, जहाँ उन्हें शिक्षण के साथ-साथ विभिन्न जागरूकता कार्यक्रमों में शामिल होने का अवसर भी मिलता है। हाल ही में 'बढ़ते कदम' कार्यक्रम के अंतर्गत एक विशेष बैठक आयोजित की गई, जिसमें एशियन लॉ कॉलेज से आई चार इंटर्न कार्यकर्ताओं ने बच्चों के साथ संवाद स्थापित किया। इस बैठक का उद्देश्य बच्चों को उनके चार मूल बाल अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। इंटर्न कार्यकर्ताओं ने बच्चों को उनके अधिकारों के बारे में सरल भाषा में समझाया, जिससे बच्चों को विषयवस्तु को आत्मसात करने में आसानी हुई। बच्चों ने इस जानकारी को बड़े उत्साह के साथ साझा किया और बताया कि उन्हें यह जानकर बहुत अच्छा लगा कि हर बच्चे को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी जरूरतें मिलनी चाहिए ताकि वह सुरक्षित और गरिमामय जीवन जी सके। इसके अतिरिक्त, शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएँ, खेलकूद और मानसिक व शारीरिक विकास के सभी अवसर प्राप्त होना भी हर बच्चे का अधिकार है। उन्होंने यह भी जाना कि हर बच्चे को शोषण, हिंसा और भेदभाव से सुरक्षा मिलनी चाहिए, साथ ही उन्हें अपनी बात कहने, सुझाव देने और निर्णयों में भाग लेने का अधिकार भी होना चाहिए। इस गतिविधि के माध्यम से बच्चों में आत्मविश्वास की वृद्धि देखी गई और उनके भीतर अपने अधिकारों के प्रति सजगता विकसित हुई। बालकनामा की रिपोर्टर रितिका द्वारा यह अवलोकन किया गया कि बच्चे केवल औपचारिक शिक्षा ही नहीं प्राप्त कर रहे, बल्कि अपने अधिकारों को लेकर भी सजग और जागरूक हो रहे हैं। यह परिवर्तन इस बात का संकेत है कि इस प्रकार की जागरूकता पहलें बच्चों के समग्र विकास एवं उनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने में सहायक सिद्ध हो रही हैं।

पानी और शौचालय की कमी से जूझते सड़क एवं कामकाजी बच्चे

बातूनी रिपोर्टर आयशा

पश्चिमी दिल्ली के शकूर बस्ती की बातूनी रिपोर्टर ने अपने समुदाय की गंभीर समस्याओं को साझा करते हुए बताया कि किस प्रकार वहां पानी और शौचालय की बुनियादी सुविधाओं की कमी के कारण बच्चों को प्रतिदिन अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। यह कहना गलत नहीं होगा कि समुदाय की हर समस्या का सीधा असर बच्चों पर पड़ता है, क्योंकि ये ऐसी वास्तविक समस्याएं हैं, जिनका अब तक कोई स्थायी समाधान नहीं निकला है। यहां पीने के पानी की व्यवस्था बेहद कमजोर है, बच्चों को पानी लाने के लिए रोजाना दो से तीन किलोमीटर दूर जाना पड़ता है। पानी का टैंकर सप्ताह में केवल एक बार आता है, और कई बार तो वह भी नहीं आता, जिससे स्थिति और भी विकट हो जाती है।

इस संकट के चलते टैंकर के समय झगड़े होना आम बात है, और ऐसे माहौल में बच्चे असहज व असुरक्षित महसूस करते हैं। बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि गर्मी के मौसम में जब वे इतनी दूर से पानी लेकर आते हैं, तो उनकी हालत बहुत खराब हो जाती है। पानी की समस्या के साथ-साथ पिछले दो महीनों से शौचालय की समस्या भी गंभीर हो चुकी है।

समुदाय का शौचालय बंद पड़ा है, जिससे बच्चों को खुले में शौच के लिए बहुत दूर जंगल की ओर जाना पड़ता है। बड़ी लड़कियाँ समूह बनाकर जाती हैं ताकि वे थोड़ी सुरक्षित महसूस कर सकें, लेकिन वहां भी उन्हें परेशान किया जाता है। बातूनी रिपोर्टर ने बताया कि खुले में शौच के दौरान कुछ शरारती लड़के उन पर पत्थर या भारी चीजें फेंकते हैं, जोर-जोर से गाने गाते हैं और पास खड़े होकर सिगरेट पीते हैं, जिससे लड़कियाँ भयभीत और अपमानित महसूस करती हैं। ऐसी घटनाएं रोज होती हैं, और लड़कियाँ स्वयं को सुरक्षित नहीं महसूस करतीं। बच्चों और खासकर लड़कियों का बस एक ही सवाल है-'आखिर ये समस्याएं कब खत्म होंगी?'

शराब और जुए की लत ने छीना बचपन, पढ़ाई छोड़ होटल में बर्तन धोने को मजबूर मासूम

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर ,
बातूनी रिपोर्टर राज

बालकनामा रिपोर्टर राजकिशोर जब गुरुग्राम की पलड़ा बस्ती में बच्चों से मिले, तो एक चौंकाने वाला मामला सामने आया। बस्ती के बच्चों ने बताया कि मोनू (परिवर्तित नाम) नामक लगभग 15 वर्षीय बालक को उसके पिता हर रोज शराब पीकर पीटते हैं, और उसकी माँ भी इस घरेलू हिंसा की शिकार है। बच्चों ने यह भी बताया कि उस व्यक्ति को जुए की लत है, और जो भी पैसे वह जुए से जीतता है, वह सब शराब पर खर्च कर देता है। इस शराब और जुए की लत ने उस मासूम के जीवन को गहरे तक प्रभावित कर रखा है। टूटी-फूटी आर्थिक स्थिति के कारण मोनू ने पढ़ाई छोड़कर एक होटल में बर्तन मांजने का काम शुरू कर दिया है। बालकनामा टीम ने जब मोनू से बात की, तो वह वहीं एक होटल में बर्तन साफ करते हुए मिला और बोला, ' मैं पढ़ाई करना चाहता था, लेकिन घर की हालत देखकर मजबूरी में होटल में काम करना शुरू किया। जो भी कमाता हूँ, माँ को देता हूँ ताकि घर चल सके।' बस्ती के अन्य बच्चों ने भी बताया कि गरीबी, नशे और घरेलू हिंसा के कारण यहाँ कई बच्चे अपनी पढ़ाई छोड़कर काम पर जाने को मजबूर हैं, जबकि भारत में 14 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से मजदूरी कराना गैरकानूनी है। यदि आप किसी बच्चे के साथ हो रहे शोषण के गवाह हैं, तो तुरंत 1098 चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर पर कॉल करें।

ग्रीष्मकालीन अवकाश के बाद विद्यालय खुलने पर बच्चों और अभिभावकों में दिखी उत्सुकता

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर नीरज

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी ने ग्रीष्मकालीन अवकाश समाप्त होने के पश्चात फिर से स्कूल खुलने पर बच्चों के अनुभव जानने का प्रयास किया इस क्रम में रिपोर्टर ने बच्चों से पूछा कि इतने दिनों के बाद विद्यालय जाना कैसा लग रहा है तो जयसिंहपुरा खोर महात्मा गांधी विद्यालय में नांमाकित बच्चों ने अपने अनुभव साझा किए तथा 9 साल की बालिका योगिता ने बड़ी उत्सुकता से बताया कि 'मैं तो कब से स्कूल खुलने का इंतजार कर रही थी। पहले तो हमें पढ़ाई में उतनी रुचि नहीं थी, लेकिन अब तो घर पर रहना अच्छा ही नहीं लगता। मैंने तो अपना बैग और कॉपियां पहले ही तैयार कर रखी थीं।₹ वहीं बालक 11 वर्षीय नीरज ने खुशी जाहिर करते हुए कहा,अब तो मैं नई क्लास में चला गया हूं। सबसे बड़ी खुशी की बात ये है कि स्कूल खुलते ही मुझे मेरे जीवन की पहली मार्कशीट भी मिली।' 12 साल के बालक अजीत ने बताया कि हमें स्कूल से अच्छा खाना मिलेगा जो कि हमें हमारे घर से मिल पाना कठिन है। इसी तरह 11 वर्ष की बालिका सिया ने भी अपनी खुशी जाहिर करते हुए बताया की 'हर बार नया सत्र एक नई उम्मीद लेकर आता है। मैं चाहती हूँ कि हमारी बस्ती के जिन दोस्तों का अभी तक एडमिशन नहीं हुआ है, उनका भी

इस साल एडमिशन हो, ताकि हमारे और दोस्त हमारे साथ स्कूल जाएं।' केवल बच्चे ही नहीं, माता-पिता भी इस बार बच्चों को स्कूल भेजने को लेकर काफी उत्सुक दिखे। इस पर बस्ती में रहने वाली अभिभावक प्रेमवती ने अपने विचार बताए कि मेरी बेटी वृन्दा के सारे दस्तावेज तो पहले से ही तैयार थे, लेकिन मैं डरती थी कि स्कूल का माहौल कैसा होगा। इसलिए मैंने उसे ओपन शिक्षा की पढाई करवाई और उसके पेपर दिलवाए। अब बस्ती के और बच्चों में पढ़ाई से आए अच्छे बदलाव देखती हूँ, तो लगता है मेरी सोच गलत थी। इसलिए आने वाले सत्र में, मैं भी वृन्दा का दाखिला स्कूल में कराऊंगी।

सड़क एवं कामकाजी बच्चों ने किया पुलिस स्टेशन का शैक्षिक भ्रमण

बालकनामा रिपोर्टर दामिनी
बातूनी रिपोर्टर नैतिक

जयपुर के जयसिंहपुरा खोर में रहने वाले 12 बच्चों के लिए पुलिस थाने का दौरा एक बेहद खास और यादगार अनुभव रहा। 'पहल' अभियान के तहत स्थानीय पुलिस अधिकारियों द्वारा इन बच्चों को थाने पर आमंत्रित किया गया, जहाँ पूरे पुलिस स्टाफ ने इन बच्चों से दोस्ताना व्यवहार करते हुए बहुत ही सरल और सहज भाषा में थाने की कार्यप्रणाली को समझाया। बच्चों ने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि कंप्यूटर, सीपीयू, की-बोर्ड, माउस और वायरलेस फोन का किस तरह और किन परिस्थितियों में उपयोग किया जाता है। बच्चों को एफआईआर दर्ज करने की प्रक्रिया भी विस्तार से समझाई गई। उदाहरण के रूप में उन्हें बताया गया कि जैसे आपकी मार्कशीट में यह रिकॉर्ड होता है कि आप पास हुए या फेल, कितने नंबर आए, ठीक वैसे ही थाने के रिकॉर्ड रूम में केस से संबंधित सारी जानकारियाँ सुरक्षित रखी जाती हैं, जो हमेशा के लिए दर्ज रहती हैं। बच्चों को यह भी सिखाया गया कि जब कोई शिकायत होती है तो सबसे पहले संतरी (जिसे चौकीदार भी कहते हैं) को बताया जाता है, फिर वह ड्यूटी ऑफिसर को रिपोर्ट करता है, और अंत में मामला स्टेशन हाउस ऑफिसर के पास जाता है। थाने में कार्यरत सभी स्टाफ से भी बच्चों का परिचय करवाया गया और उन्हें उनके-अपने कार्यों की जानकारी दी गई। इसके साथ ही, बच्चों को जरूरी हेल्पलाइन नंबर, उनके अधिकार, और कानून की बुनियादी बातें भी सिखाई गईं, जिससे वे यह समझ सकें कि पुलिस समाज में उनकी मदद के लिए कार्य करती है। इस अवसर पर हेड कांस्टेबल श्री रमेश जी ने कहा, 'हमारा उद्देश्य है कि बच्चे पुलिस से डरें नहीं, बल्कि उन्हें अपना मित्र समझें। जब भी कोई मुसीबत आए, बच्चे बेझिझक हमारी मदद ले सकें। जब उन्हें सही जानकारी होगी, तभी वे आगे चलकर अपनी सुरक्षा खुद करने में सक्षम होंगे और कानून के प्रति उनका विश्वास भी मजबूत होगा।' इस अनुभव से उत्साहित 11 वर्षीय बालक नैतिक ने अपनी खुशी व्यक्त करते हुए कहा, 'मुझे आज बहुत अच्छा लगा। पहली बार पुलिस स्टेशन देखा और जाना कि यहाँ कितनी ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। अब मैं ये सारी बातें अपने घर और दोस्तों को भी बताऊँगा।'

बचपन पर मंडराता नशे का साया, बस्तियों में खुलेआम बिक रहे नशीले पदार्थ

ब्यूरो रिपोर्ट

अधिकतर माता-पिता को यह जानकारी नहीं होती कि जब वे अपने काम पर चले जाते हैं, तो उनके बच्चे पूरे दिन क्या कर रहे होते हैं। क्या वे सही रास्ते पर हैं या किसी गलत कार्य में लिप्त हैं? बस्ती में बच्चों ने एक गंभीर मामला साझा किया, जिसमें बताया गया कि 15 से 17 वर्ष की उम्र के कुछ किशोर एक खतरनाक गतिविधि में शामिल हैं। नोएडा की एक मूर्ति के पास स्थित एक मार्केट क्षेत्र में रहने वाले 14 वर्षीय बालक बबलू (परिवर्तित नाम) ने बताया कि जिस बस्ती में वह रहता है, वहां एक बहुत बड़ी समस्या है। उस क्षेत्र में खुलेआम गांजा बेचा जाता है और यही नहीं, 15 से 17 वर्ष के किशोर भी इस कार्य में लगे हुए हैं। इन बच्चों से यह कार्य कुछ बड़े लोग करवाते हैं, जिन्होंने तीन प्रमुख स्थान तय कर रखे हैं, जहां प्रतिदिन जाकर यह नशे का सामान बेचा जाता है। चौंकाने वाली बात यह है कि इन बच्चों के माता-पिता को इस बात की कोई भनक तक नहीं होती कि उनके बच्चे इस तरह के गलत कामों में संलिप्त हैं। यदि कोई बच्चा या व्यक्ति इन किशोरों को इस कार्य में देख लेता है, तो ये किशोर उन्हें रिश्वत या कुछ वस्तुएं देकर चुप करा देते हैं, ताकि यह बात उनके माता-पिता तक न पहुंचे। बस्ती में रहने वाले बच्चे बताते हैं कि अक्सर बाहरी लोग आकर पूछते हैं कि गांजा कहां मिलता है, जिससे वे बेहद असहज और परेशान महसूस करते हैं। जो किशोर गांजा बेचते हैं, वे बस्ती की लड़कियों को भी गंदी नजरों से देखते हैं, जिससे माहौल और भी असुरक्षित हो जाता है। यह पूरा नेटवर्क इतनी मजबूती से चलता है कि इन लोगों को पकड़ना मुश्किल हो गया है, क्योंकि वे हर महीने पुलिस को 20,000 की रिश्वत देते हैं। इसी कारण ये निडर होकर यह गैरकानूनी काम करते रहते हैं। जब हम बच्चे इस बारे में कुछ बोलते हैं या विरोध करते हैं, तो हमें भी अपशब्द कहे जाते हैं और धमकाया जाता है।

शादी पार्टियों में काम करने जाते हैं बच्चे

बातूनी रिपोर्टर मोना व रिपोर्टर किशन

जब भी आप किसी शादी या पार्टी जैसे आयोजनों में जाते होंगे, तो आपने वहां कुछ ऐसे बच्चों को जरूर देखा होगा जो तरह-तरह के काम करते हैं जैसे- बर्तन धोना, खाना परोसना, सफाई करना आदि। आज हम इन्हीं बच्चों के बारे में बात करने जा रहे हैं। हाल ही में कुछ पत्रकार नोएडा की बस्तियों में पहुंचे। दौरे के दौरान पत्रकारों ने देखा कि लगभग 10 बच्चे, जिनकी उम्र 12 वर्ष से लेकर 17 वर्ष के बीच थी, एक समूह में गहन चर्चा कर रहे थे। जब पत्रकार उनके पास पहुंचे और उनकी बातचीत खत्म होने के बाद कुछ बच्चों से बात की, तो जो बातें सामने आईं, वे चौंकाने वाली थीं। एक 15 वर्षीय बालक शाहिद (परिवर्तित नाम) ने बताया, ₹हम नोएडा सेक्टर 49 की बस्तियों में अपने माता-पिता के साथ रहते हैं। यहां ज्यादातर माता-पिता सुबह-सुबह ही दिहाड़ी मजदूरी के लिए निकल जाते हैं।

13 से 17 वर्ष तक के बच्चे घर पर ही रहते हैं, और अधिकतर बच्चे कुछ काम नहीं करते, इसलिए बस्ती के कई बड़े बच्चे शादी और पार्टी जैसे कार्यक्रमों में काम करने चले जाते हैं।₹ शाहिद ने बताया, ₹बस्ती के कुछ बड़े अंकल हमें साथ लेकर जाते हैं और वहां हम शादी पार्टियों में बर्तन

धोने, खाना बांटने, सफाई करने जैसे काम करते हैं। हम शाम 6 बजे घर से निकलते हैं और सुबह 4 बजे लौटते हैं। हमें एक रात का 700 से 800 रुपये तक मेहनताना मिलता है। लेकिन अगर कोई बच्चा बर्तन ठीक से न धो पाए या काम में देर करे तो ठेकेदार डांटता है, यहां तक कि मार भी देता है। इस डर से बच्चे काम में तेजी दिखाने लगते हैं।₹ बच्चों ने यह भी बताया कि इस काम का एक फायदा यह होता है कि उन्हें अच्छा खाना खाने को मिल जाता है, और वे थोड़ा-बहुत खाना घर भी ले जाते हैं। जो भी पैसे मिलते हैं, वे अपने माता-पिता को दे देते हैं ताकि घर का खर्च चल सके।

यह पत्र सीमित वितरण के लिए है इस अंक में सभी चित्र बच्चों की अनुमति से प्रकाशित किए गए हैं

बालकनामा अखबार को प्रकाशित करने में हमारी मदद करने के लिए एचसीएल फाउंडेशन तथा अजीम प्रेमजी फाउंडेशन का बहुत धन्यवाद। आप प्रकाशन में भी हमारी मदद कर सकते हैं। बालकनामा अखबार के प्रकाशन में आप भी सहयोग दे सकते हैं। संपर्क करें : info@chetnango.org

बढ़ते कदम , 31 , बेसमेंट , गौतम नगर , नई दिल्ली - 110049 द्वारा प्रकाशित। न्यूजलेटर सीमित वितरण के लिए। बच्चों के चित्र उनकी अनुमति से प्रकाशित।
समर्थन के लिए संपर्क करें -editorbalaknama@gmail.com फोन - 41644471